[illegible] ही भूमण्डल

का

सार्वजनिक धर्म सिद्धान्त हो सक्ता है

अर्थात्

जैनधर्म के सिद्धान्त ही

सार्वभौम धर्म की बुनियाद हो सक्ते हैं।

लेखक —

माईदयाल जैन बी॰ ए॰, आनर्स

जैन मित्र मण्डल ट्रैक्ट नम्बर ४८

* वन्दे जिनवरम् *

जैन धर्म के सिद्धान्त ही सार्वभौम धर्म की बुनियाद हो सकते हैं।

जिसको

जैन मित्र मण्डल देहली द्वारा मनाई हुई

२५२५ वीं वीर जयन्ती के वास्ते

माईदयाल जैन, बी० ए० (आनर्स) सोनीपत,

सम्पादक जाति प्रबोधक ने लिखा

और

जैन मित्र मण्डल दरीबा कलां, देहली

ने

प्रकाशित किया।

— * —

प्रथमावृत्ति २००० | सन् १९२७ वीर निर्वाण सं० २४५४ | मूल्य)॥

महारथी प्रेस, चांदनी चौक देहली में मुद्रित।

जैनधर्म के सिद्धान्त ही सार्वभौम धर्म की बुनियाद हो सकते हैं।

लौकिक और पारलौकिक उत्थान के वास्ते धर्म परमा[वश्]यक है। तभी तो हर एक व्यक्ति कुछ न कुछ धर्म पालन [क]रता है। धर्म का आधार विश्वास होता है। किन्तु देखा [जा]ता है कि कुछ समय से साधारणतया समस्त संसार के [औ]र विशेषतया यूरुप और अमरीका के धार्मिक विश्वासों [में] बडी हल चल मची हुई है। जहां आधुनिक विज्ञान की [ज़]बरदस्त आंधी इस गडबड का प्रधान कारण है वहां अपने [धर्]मों के पालन करने से इष्ट शान्ति न मिलना भी एक मुख्य [कारण] है। इस ही हलचल के परिणाम स्वरूप स्थान स्थान [पर] धर्मसभायें (Religious Conferences) लगाई जाती हैं, [औ]र नित्य ही नवीन नवीन धर्मों की दीक्षायें ली जाती हैं। [जा]पान वालों का अपने वर्त्तमान धर्म से असंतुष्ट होकर किसी [प्रा]चीन भारतीधर्म की खोज के वास्ते एक कमेटी नियुक्त करना, [अम]रीका और यूरुप वालों का यहां आ आकर किसी धर्म की [दीक्षा] ले लेना, और यहां के भिन्न भिन्न धर्मों के प्रचारकों के

मेरे दो शब्द

भाई माईदयाल जाति के एक उदीयमान लेखक हैं।
आपके लेखों में विचारों की प्रौढ़ता रहती है।
योग्य होते हैं। आपका यह लेख हमें गत-वीर-जयन्ती के
अवसर पर प्राप्त हुआ था। जितने भी लेख हमें मिले थे
हमने विद्यावारिधि बाबू चम्पतराय जी बैरिस्टर के पास
निरीक्षणार्थ भेज दिये थे। प्रस्तुत लेख को उन्होंने अपने
विषय का सब से श्रेष्ठ ठहराया। उनका तो यहाँ तक
कहना है कि यह हिन्दी के अलावा उर्दू और अंग्रेजी में
भी जरूर प्रकाशित किया जाय। अपनी विज्ञप्ति के
अनुसार भाई माईदयाल जी को इसके उपलक्ष्य में मंडल
की ओर से पहिली कोटि का सम्मान पत्र दिया गया
है। इतने शब्दों के साथ हम माईदयाल जी का यह
"जैन धर्म ही भूमि धर्म का आधार हो सकता है"
निबन्ध समाज के सन्मुख प्रस्तुत करते हैं। आशा है पाठक
इसे उसी चिन्ता शीलता से पढ़ेंगे जिसके कि साथ
लिखा गया है।

दीपावलि
वीर निर्वाण सम्वत् २४५४

मन्त्री
जैन मित्र मंडल

जैनधर्म के सिद्धान्त ही सार्वभौम धर्म की बुनियाद हो सकते है ।

लौकिक और पारलौकिक उत्थान के वास्ते धर्म परमा
श्यक है । तभी तो हर एक व्यक्ति कुछ न कुछ धर्म पालन
करता है । धर्म का आधार विश्वास होता है । किन्तु देखा
जाता है कि कुछ समय से साधारणतया समस्त ससार के
और विशेषतया यूरूप और अमरीका के धार्मिक विश्वासों
में बडी हल चल मची हुई है । जहा आधुनिक विज्ञान की
जबरदस्त आधी इस गडबड का प्रधान कारण है वहा अपने
धर्मों के पालन करने से इष्ट शान्ति न मिलना भी एक मुख्य
कारण है । इस ही हलचल के परिणाम स्वरूप स्थान स्थान
पर धर्मसभायें (Religious Conferences) लगाई जाती है,
और नित्य ही नवीन नवीन धर्मों की दीक्षायें ली जाती है ।
जापान वालों का अपने वर्त्तमान धम स असतुष्ट हाकर किसी
नवीन भारतीधर्म की खोज के वास्ते एक कमेटी नियुक्त करना,
अमरीका और यूरूप वालों का यहा आ आकर किसी धर्म की
दीक्षा लेना, और यहा के भिन्न भिन्न धर्मों के प्रचारकों के

[illegible]सी भी समय में कोई धर्म संसार में सर्वव्यापी और [illegible]र्व मान्य होजायगा और अन्य धर्मों का लोप हो जायगा। [illegible]सा सोचना एक ऐसे आदर्श की कल्पना करना है [illegible]स की प्राप्ति कभी न होगी। हां किसी धर्म का अपेक्षा [illegible]त अधिक प्रचार हो जाना दूसरी बात है। किन्तु यदि कभी [illegible]री शक्ति और सच्चे हृदय से किसी ऐसे धर्म की स्थापना का [illegible]यत्न किया गया जो सार्वभौम धर्म का काम दे सके और [illegible]संसार के सब जीवों को धर्म की एक लडी में पिरो सके। तो [illegible]रे विचार में उसकी बुनियाद डालने में उसही धर्मके सिद्धान्त [illegible]धिक कारकारी होंगे जिसमें ये बातें होंगी—

(१) सब को आपस में किसी समझौते पर पहुचाने में समर्थ होना। (Compromising)

(२) अत्यन्त अधिक हितकारी होना। (Highly Benficial)

(३) पूर्णता (completeness)

(४) वैज्ञानिक और युक्ति युक्त होना (Scientific and rational)

(५), सरल और व्यवहार्य होना (Easy and practicable)

सार्वभौम धर्म के उपरोक्त पांच मापों (Standards) को [illegible]ब ही स्वीकार करेंगे। जिस धर्म के सिद्धांत इन बातों [illegible]ो पूरा करेंगे वह सार्वभौम धर्म का रूप धारण करने अथवा [illegible]सार्वभौम धर्म की बुनियाद के वास्ते उपयोगी होने के योग्य [illegible]है—अन्य नहीं। अब हम यह देखने का प्रयत्न करेंगे कि जैन [illegible]धर्म के सिद्धान्त कहां तक इन गुणों से विभूषित हैं।

भिन्न भिन्न धर्मों के सिद्धान्तों में इतना मत भेद है
उनको देखते हुए सब धर्मों को एक स्थान पर
असम्भव सा दिखाई पडता है। उनकी सर्वथा
विरोधात्मक (Diverse) हैं कि उनका एक मत करना
है। सार्वभौम धर्म के मार्ग में सब से बड़ी अड़चन यही है
इस उलझन को सुलझाने में प्राय: सब ही धर्म असमर्थ हैं
किन्तु जैन धर्म का स्याद्वाद सिद्धान्त जिसे अनेकान्तवाद
का सिद्धान्त भी कहते हैं, इस गोरखधंधे का सुलझाने
अर्थात् भिन्न भिन्न मतभेदों का मिटाने में, पूर्णतया समर्थ है।
वह कहता है कि किसी भी बात पर विविध दृष्टि कोन
(Various Points of Views) से विचार करना चाहिये। ए
दृष्टि कोन (One point of View) से किसी विषय पर विचा
करना एकान्तवाद है, और यह प्रणाली सदोष है। स
अनिरुद्ध ... किये हुये मत ... पूर्ण सत्य मान

सच्ची हितैषिता ही धर्म का लक्ष्य है। यूं तो ससार के
ये ही धर्म जीवों को हित प्रदान करते हैं, किन्तु यह हितै
ता प्राय सकुचित क्षेत्र तक ही परिमित रहती है। किन्तु
न धर्म का अहिंसा सिद्धान्त जीवों के वास्ते कितना हितैषी
यह बताना कठिन है। वह मन, वचन और कर्म से किसी
जीवधारी देह का प्रमाद से वध करना, उसे दुख देना,
ाप कर्म मानता है। वह जीवों को पूर्णतया 'जीवो और
ाने दो' (Live and let live) का उपदेश देता है। हर
क प्राणी की रक्षा, प्रेम, और दया का शुभ सदेश उसके
ारा पहुचता है। विश्व प्रेम और अनन्त शान्ति अहिंसा के
च्च सिद्धान्त में कूट कूट कर भरी हुई है। यही अहिंसा
मारे हा परम धर्म माना गया है। मोक्षप्राप्ति का इसके
तिरिक्त और कोई साधन नहीं है। बहुत से आदमी अहिंसा
द्धान्त को कायरता का प्रचारक कहते हैं, किन्तु वास्तव
 वह अपार साहस और वीरता का द्योतक है। फिर यदि
ार्वभौम धर्म में अहिंसा के सिद्धान्त को पूर्ण स्थान दिया
ाय तो जीवों का जो कल्याण हो उसे आप ही सोच लें।
श्वव्यापी शान्ति (Universal peace) की यही कुञ्जी है।
र अन्तर,जातीय शान्ति (Intrenational peace) तो एक
ाधारण सी वस्तु है।

सार्वभौम धर्म की बुनियाद उन्हीं सिद्धान्तों पर रक्खी
ायगी जो पूरे (complete) होंगे—अधूरे सिद्धान्तों पर

अंतिम बात सिद्धान्तों का सरल और व्यवहार्य होना है। जो सिद्धान्त इतने सरल हैं कि उनमें धर्म के उद्देश्य की प्राप्ति ही नहीं हो सकती अथवा जो सिद्धान्त इतने कठिन हैं कि उन का व्यवहार में ही नहीं लाया जा सकता—उनसे लाभ ही क्या? इस दृष्टि से हिन्दुओं का आश्रम धर्म बहुत से धर्मों से अच्छा है। किन्तु जितना क्रमयुक्त (Graded) हमारा चारित्र धर्म—मुनि धर्म और गृहस्थ धर्म—है वह बात शायद ही कहीं मिले। उसमें क्रम से चारित्र की इतनी श्रेणियां बनादी गई हैं कि हर एक योग्यता का व्यक्ति उनको पालन कर मोक्ष के कठिन आदर्श को प्राप्त कर सकता है। सहज सहज-चल कर लाया मार्ग पार करने का ढंग जैनाचार्यों ने ही बताया है। छलांग मार कर नीचे की पैड़ी से छत पर पहुंचने का दुष्कर और हानि पूर्ण मार्ग यहां नहीं है। यहां धर्म पालन का अभ्यास सरल और व्यवहार्य ढंग से कराया जाता है। यही कारण है कि जैन साधु संसार में सब से अधिक चारित्रवान होते हैं, और जैन गृहस्थ भी चारित्र में किसी से कम नहीं होते। जो लोग जैन धर्म के सिद्धान्तों को व्यवहार्य दृष्टि से विवाद योग्य (Debatable) समझते हैं वे वास्तव में जैनों के कठिन चारित्र को ही देखते हैं उसके ढंग पर अर्थात जिस अभ्यास से वह पाला जाता है उस को समझने की कृपा नहीं करते। यह पूरे जोर से कहा जा सकता है कि हमारे चारित्रिक (Ethical code) आदर्श हैं और वह सरल और व्यवहार्य हैं।

प्रिय महानुभावों ! ऊपर के संक्षिप्त विवरण से यह स्पष्ट होगया कि जैन धर्म के सिद्धान्तों में व सब गुण हैं जो सार्वभौम धर्म के वास्ते आवश्यक हैं। यदि किसी दिन सार्वभौम धर्म का ढांचा तय्यार किया गया तो उसमें जैन धर्म से पर्याप्त सामग्री ली जायगी।

यदि यहां मैं यह बताने की चेष्टा न करू कि जैन धर्म के बड़े पमाने (Large scale) पर प्रचार होने में कौन कारण बाधक हैं और हमारे धर्म का प्रचार किस प्रकार हो होसकता है, तो मैं एक सुनहरी अवसर को खोता हू । हमारे समाज का वर्तमान व्यवहार (Attitude) ही उसके प्रचार में बड़ी भारी अड़चन है। हमने अपने व्यवहार से अपने आप को अपने पूर्वजों के योग्य उत्तराधिकारी प्रमाणित नहीं किया। और ना ही अपने आप को उस के वास्ते अच्छे पात्र बन कर दिखाया। जैन धर्म के उदार उपदेशों के गले में हमने संकुचितता की रस्सी डाल दी। अनेकान्त वाद को एकान्तवाद का अंधा चशमा लगा दिया। अहिंसा धर्म के महान तत्व पर स्वयं हमने हिंसा की पुड़ी छुरी फेर दी। जो धर्म प्राणी मात्र के कल्याण के वास्ते था, उसको हमने अपनी पैतृक सम्पत्ति समझ लिया। मूर्खता से हम समझ बैठे हैं कि अन्य किसी को जैन धर्म के दर्शन करा देने से अथवा उसका स्वाद अन्य किसी को चखा देने से हमारा भाग (Share) कम होजायगा। किन्तु शोक की बात तो यह है कि हम स्वयं भी न

अपने धर्म को समझते हैं और न उस पालन करते हैं उसमें सर्वथा कोरे हैं स्वयं सोया हुआ आदमी और किसी को क्या खाक जगा सकता है ? इस लिए पहिले स्वयं धर्म के रहस्य को समझने की परम आवश्यकता है।

जैन धर्म का पूर्ण रूप से प्रचार करने में इन बातों की तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रथम जैन साहित्य का प्रचार बड़े प्रमाण पर होना चाहिये। उसके अनुवाद देसी सब मुख्य २ भाषाओं में होने चाहिये। और वे लागतमात्र से भी कम पर अथवा मुफ्त बटने चाहियें। नवीन साहित्य की रचना की भी बड़ी आवश्यकता है। इस काम में हमें ईसाइयों से कुछ सीखना चाहिये। हमने जो हानि अपने आप को जैन साहित्य का प्रचार न करने से पहुंचाई है उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। हमारी इस भूल से हमारा साहित्य ही नष्ट नहीं हुआ, वरन हमारे धर्म और साहित्य के विषय में अजैनों की ऐसी २ भ्रम मूलक सम्मतियां हो गई हैं जिन से जैन धर्म को बड़ा भारी धक्का लगा है। जब हम अजैनों पर उनके द्वारा जैन धर्म पर लगाये हुए आक्षेपों पर क्रोध करते हैं उस समय हम यह देखने का प्रयत्न नहीं करते कि हमने उनको जैन धर्म को जानने का साधन ही क्या दिया है ? यदि अब भी हम इस ओर शीघ्र और पूरा ध्यान दें तो बहुत कुछ होसकता है। दूसरी बात किसी देश केन्द्र की स्थापना है जहां से जैनधर्म के दिग्गज विद्वान् तय्यार हों और प्रसार

में जैन धर्म का प्रचार करें। वे योग्य, त्यागी कर्तव्यशील और जैन सभ्यता के नमूने हों। प्रेम और परोपकार के भावों से उन के हृदय परिपूर्ण होना चाहिये और धर्म प्रचार के वास्ते वे दुनिया के सब भागोंमें निर्भीकता से भ्रमण करने को तय्यार रहें। उस केन्द्र में जैनधर्म के पठन पाठन का पूरा प्रबन्ध हो और साधुओं और श्रावकों के वास्ते उस में अलग अलग प्रबन्ध हो यहा पर जैन ग्रन्थों का एक वृहद् संग्रह भी होना चाहिये और यहा से एक उच्च कोटि की पत्रिका जैन सिद्धान्तों पर लेखों से पूर्ण निकलनी चाहिये। यह संस्था दलबन्दी की दलदल से दूषित न हो। तीसरी बात जैनधर्मका संशोधन है। मेरा विचार है कि जैन धर्म में समय और अजैनों के प्रबल प्रभाव से बहुत सा कूडाकरकट भर गया है। और उसका अलग किया जाना परमावश्यक है। हमें वर्तमान धर्म में मूल सिद्धान्तों को बदले बिना उनके अनुसार कुछ देश, काल और द्रव्यानुसार परिवर्तन भी करने होंगे। यह बात विचारणीय है। चौथी बात है सब शक्तियों का संगठन। संगठन की शक्ति अपार है। इससे कठिनसे कठिन काम भी आसानी से हो सकता है। धर्मप्रचार के वास्ते विद्वानों, धनियों और कार्य कर्त्ताओं का परस्पर पूर्ण सहयोग होना चाहिए। जब तक यह न होगा धर्म प्रचार का काम एक इंच भी आगे नहीं सरक सकता है। पाचवें, हमारे हृदयों में सकीर्णता नाम को भी न होनी चाहिये। जो भी आदमी—पुरुष या स्त्री—जैन धर्म के

सिद्धांतों पर मुग्ध होकर उसे ग्रहण करने को तय्यार हो, उसको बड़े प्रेम और महती उदारता के साथ अपने धर्म की दीक्षा देना चाहिये। उसके वास्ते धर्मपालन के सब सुभीते पैदा करें। साथ ही हमें उसकी सामाजिक कठिनाइयों को भी दूर करना होगा। क्योंकि यदि हम बारीक दृष्टि से देखें तो सामाजिक अड़चनें ही लोगों के जैनधर्म को स्वीकार करने में बड़ी रोक हैं। अतः हमें उनको पूर्णतया दूर करना होगा। और यह घोषणा करनी होगी कि जो कोई भी आदमी जैन धर्म को स्वीकार करना चाहे उसके वास्ते जैन धर्म और जैन समाज का दरवाजा खुला है। इस प्रकार के व्यवहार को प्रारम्भ में हमारे कुछ भाई बुरा समझेंगे। कारण यही है कि वर्तमान काल में ऐसी बातों का लोप सा होगया है। किन्तु यह बात जैन धर्म के विद्वान् निःपक्षपात होकर स्वीकार करेंगे कि इस प्रकार का व्यवहार पूर्णतया जैन-शास्त्र सम्मत है। और भगवत् जिनसेनाचार्य ने आदिपुराण में अजैनों को जैन बनाकर उनसे सब सामाजिक व्यवहार करने की आज्ञा दी है। अतः हमें अपने पक्षपात को छोड़ कर उदारता पूर्वक दूसरों को जैन बनाना चाहिये। अन्तिम किन्तु परमावश्यक बात विपुल धन का संग्रह है। धन ही सब आन्दोलनों तथा सब कामों का आधार है। बिना धन के साहस विद्वत्ता और त्यागादि गुण अधिक लाभदायक नहीं हो सकते। जैन समाज जो कि धन की मालिक कही जाती है उसके वास्ते अपने

परम प्रिय धर्म के प्रचार के वास्ते देना कुछ भी कठिन नहीं है।
यूं तो धर्म के वास्ते हम प्रति वर्ष करोड़ों रुपया व्यय करते हैं।
किन्तु यह हमारे लिये बड़े ही दुख की बात है कि जिस ढङ्ग
से उसका व्यय किया जाता है वह अधिक उपयोगी नहीं है।
जितना हम व्यय करते हैं उसके सामने उससे लाभ कम होता
है। इस लिये आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल अपने
खर्च की लगाम को बिम्ब प्रतिष्ठा, मन्दिर निर्माण, और उत्सवों
आदि की ओर से साहित्य प्रचार, शिक्षा प्रचार धर्म प्रचार,
और लोक हितकारी कामों की ओर फेर दें। हमारे भाइयों
को यह कभी भी नहीं सोचना चाहिये कि जैन समाज तथा जन
समाज का सच्चा हितैषी उन्हें ऐसे काम बतायेगा जिनसे धर्म को
धक्का लगेगा। सब ही धर्म की प्रभावना के काम बतायेंगे।
इसलिए समाज को अब अपने पुराने अनुपयोगी धर्म प्रभावना
के ढगों को छोड़कर इन उपयोगी ढगों को अपनाना चाहिए
जिनका कुछ वर्णन ऊपर किया गया है। आप सब भाई भली
प्रकार देखते हैं कि ईसाई लोग भारत में ही नहीं वरन सारे
संसार में किस ढंग से उपयोगी साधनों पर किस विपुलता के
साथ धन का व्यय करके संसार को धड़ाधड़ ईसाई धर्म में
दाखिल कर रहे हैं। कारण केवल यही है कि वे समय की गति
को समझते हैं और हम अपनी पुरानी लकीर को ही पीट रहे हैं।

अन्त में जहां अजैन बन्धुओं से यह निवेदन है कि वे स्वयं
भी जैन धर्म को समझने का प्रयत्न करें। यदि वे वास्तव में

सच्चे सुख के इच्छुक हैं यदि वे शान्ति और आनन्द को चखना चाहते हैं तो जैन धर्म के परम शान्त सरोवर में उनकी मनो कामना पूर्ण होगी। एक दो डुबकी अवश्य लगा कर देखें। उन का प्रयत्न निष्फल नहीं जायगा। अपने सहधर्मियों से भी सानुरोध यह निवेदन है कि यदि आप के हृदयों में जैन धर्म के प्रति सच्चा अनुराग है, यदि आप के हृदयों में भगवान महावीर के प्रति वास्तविक भक्ति है और यदि आप को जैन धर्म की सच्ची प्रभावना इष्ट है तो जैन धर्म का स्वयं आदर्श रूप में पालन करते हुए उसका तन, मन और धन से प्रचार करो। औरों को आनन्द, शान्ति और प्रेम दो फिर यह सब आप के पास स्वयं चली आयेंगी। देने का आनन्द ही न्यारा होता है। यह अनुभव गम्य है। जैन धर्म के प्रचार का यह सुवर्णमयी अवसर है। विदेशों में जैन धर्म के जो बीज स्वर्गीय श्री वीरचन्द गांधी जी द्वारा बोये गये थे वे फूट चुके हैं। उन का सिंचन भी विद्यावारिधि श्रीमान चम्पतराय जी बैरिस्टर द्वारा हो चुका है। अब यह केवल आप का कर्तव्य है कि आप उन की उचित सम्भाल और रक्षा का प्रबन्ध सुव्यवस्थित और सुन्दर ढंग से करें। यदि आपने अब इस ओर ध्यान न दिया तो यह अवसर हाथ से निकल जायगा और फिर पछताना व्यर्थ होगा। यदि भगवान महावीर की जयन्ति पर आपने इस कार्य को कर दिया तो समझा जायगा कि आपने भगवान् की सच्ची जयन्ति मनाई है—कोरी बातें नहीं बनाईं।

धर्म की सच्ची प्रभावना का इच्छुक

माईदयाल जैन